शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वायत्त शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन और शिक्षक की भूमिका

डॉ. निर्मला सिंह
सहायक प्राध्यापक (गृह प्रबंध)
कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट
इन्दौर (म.प्र.), भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा में गुणवत्ता का अपना विशेष महत्व है। इसे अपनाने के लिए पाठ्यक्रम को निरंतर अद्यतन करते रहना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के स्वायत्त संस्थानों में इस ओर ध्यान भी दिया जाता है, परन्तु कभी-कभी केवल नामकरण में बदलाव कर उसे परिवर्तन का नाम दे दिया जाता है। इस प्रवृत्ति से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में कठिनाई उपस्थित हो जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसके व्यावहारिक पहलुओं पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

गुणवत्ता बढ़ाने की सोच के साथ ज्यादातर पाठ्यक्रम में परिवर्तन किए जाते हैं। कभी विषयों के नामकरण में परिवर्तन कर दिया गया है तो कभी पाठ्यक्रम की पाठ्य सामग्री को ऊपर-नीचे इधर-उधर कर कुछ नयापन लाने की कोशिश की गई। पिछले 5-7 वर्ष के गृह विज्ञान संकाय के पाठ्यक्रमों की यदि आज के पाठ्यक्रमों से तुलना करें तो उसमें कुछ नयापन नहीं बल्कि टूटापन और अधूरापन आ गया है।

शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि के लिए पहले शिक्षक को, शिक्षा को सही मायनों में समझना जरूरी है। अर्थ यही है कि यदि शिक्षक सिर्फ यह सोचे कि मैं सिखा रहा/रही हूँ तो यह सोच पूरी तरह से सही नहीं है। हमें सोचना चाहिए कि मैं सीखकर सिखा रहा/रही हूँ। किस विषय को कैसे सिखाना है यह हमें विद्यार्थियों से सीखना पड़ता है। यह प्रक्रिया पूरी तरह मांग और पूर्ति के नियम की तरह है। मांग अध्यापन की है, लेकिन शिक्षक की ओर से पूर्ति उपभोक्ताओं (विद्यार्थियों) के अनुसार होनी चाहिए। तभी वे वस्तु (शिक्षा) का उपभोग (ग्रहण और अनुसरण) सरलता से और पूर्ण संतुष्टि के साथ कर सकेंगे। शिक्षक ये जानें कि विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता का स्तर कैसा और कहाँ तक है, वहीं से अध्यापन की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिये। संभव है शिक्षक बहुत विद्वान हो और अपनी विद्वत्ता का सीधा प्रयोग विद्यार्थियों पर करे, तो यह विद्वत्ता निरर्थक भी जा सकती है।

शिक्षक की भूमिका

स्वायत्तता से गुणवत्ता संवर्धन के लिए विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक, प्रबन्धक और प्रशासन को संयुक्त रूप से जिम्मेदार माना गया है, किन्तु एक शिक्षक के नाते विचार है कि इसमें प्रथम और अहम भूमिका शिक्षक की है। प्रशासन को उसका (शिक्षक का) पूर्ण सहयोगी होना चाहिए। समर्पित और जुझारू शिक्षकों के समूह से (जिसमें प्रत्येक संकाय के शिक्षक हों) स्वायत्तता के सदुपयोग के लिए पाठ्यक्रम और योजनाएं बनवाई जाना चाहिए।

शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि स्वायत्तता का उपयोग कर गुणवत्ता संवर्धन के लिए पाठ्यक्रम ऐसे बनाएं जो प्रत्येक विद्यार्थी को ज्ञान के साथ रोजगार की खोज का मार्ग बता दे और उनमें नैतिक और मानवीय मूल्यों का सोच भी विकसित करे।

संकाय के विषयों का संगठन संकाय के वर्तमान और भविष्य की मांग और आवश्यकता के अनुसार होना जरूरी है।

पाठ्य सामग्री अध्यापन के अनुसार क्रमबद्ध होना चाहिए। साथ ही विस्तृत-बिन्दुवार पाठ्यक्रम हो, ताकि स्पष्टता बनी रहे।

पाठ्यक्रम के नवीनीकरण में हर बार उसे तोड़ने के स्थान पर उसमें नवीन जोड़ का प्रयास हो।

पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य पुस्तकों की उपलब्धता भी आवश्यक है। प्रत्येक पाठ्यक्रम में समस्त संदर्भ ग्रंथ की सूची भी अति आवश्यक है। प्रत्येक सैद्धांतिक के साथ उससे सम्बन्धित ही प्रायोगिक कार्य हों।

प्रायोगिक कार्य का स्तर, स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के अनुरूप होना चाहिए।

मूल्यांकन

सतत मूल्याकंन विद्यार्थी की अध्ययन क्षमता को बढ़ाता है और स्वमूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करता है। इससे बौद्धिक क्षमता की वृद्धि का प्रयास बढ़ता है।

मूल्याकंन करते समय शिक्षक स्वयं के प्रति दृढ़ और निष्ठावान रहें। विद्यार्थी को बेचारों की श्रेणी में न डालें। सैद्धांतिक और प्रायोगिक कार्य में सही मूल्यांकन करें।

अध्ययन कार्य में कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त श्रम-शक्ति लगाना और शिक्षण की अन्य उपयुक्त विधि को अपनाना आवश्यक है।

प्रतिफल

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिक्षा के माध्यम से हमें विद्यार्थियों में एक सकारात्मक और सृजनात्मक बदलाव लाना है यह बदलाव स्वयं ही उसे रोजगार से जोड़ देगा।

रोजगार का अर्थ भौतिकता की दौड़ से न लगाया जाए, बल्कि शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के साथ कौशल को बढ़ाने से जोड़ा जाए। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से समाज में संस्कृति का विकास होना चाहिए, न कि विकृति का।

अंततः गुणवत्ता संवर्धन के लिए शिक्षक में ज्ञान, तकनीक और आधुनिकता भी हो किन्तु उसके आचार-विचार व्यवहार और जिम्मेदारी में परम्परागत मूल्यों का समावेश भी आवश्यक है तभी सही मानों में वह नैतिकता के साथ अपने शिक्षक धर्म का पालन कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.सिंह मनोज कुमार, 'शिक्षा और समाज' - आदित्य पब्लिशर्स

2.शर्मा रमा, मिश्रा एम.के., "गृह विज्ञान शिक्षण, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस

3 Community, Research Paper. Dammani Kiran; Quality Enhancement in Higher Education through Atunomous Status", Research paper.